1

515

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट–9

(प्रश्न पत्र–I)

DTVF / OPT-24 HL-2409

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Siddharth Kumar Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): —

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

3	6	0	0	2	7	7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

---

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

अर्धमागधी अपभ्रंश की पूर्वी बोली से विकसित अवध प्रदेश की अवधी यद्यपि अपने लोकमंगल व मर्यादा (रामचरितमानस) के लिए अद्वितीय है लेकिन इसकी कुछ सीमायें इसे सीमित बनाती हैं।

अवधी की सीमाएँ : →

① लोकमंगल का पर्याय बनना लेकिन लोकरंजन धारण न कर पाना।

जैसे - ब्रजभाषा

② अवधी में कोमलता, सहृदयता की विषयवस्तु को महत्व न मिलना

③ संध्याक्षरों का प्रयोग में असमानता

उदा॰ - बैल > बइल

औरत > अउरत

④ संज्ञा के तीन रूप होना अवैज्ञानिकता

उदा॰ - लड़का, लड़कवा, लड़कउना

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

(5) संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के कारण भाषायी असहजता।
उदा० — ~~रतन~~
— "रतन हुआ ~~जिन~~ छाघन्ह सौति।"

फलतः अवधी की कमियाँ ही उसे ब्रज की तुलना में कमजोर व अंततः खड़ी बोली के दौर में समाप्तप्राय: बनाती हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' का योगदान

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

सांस्कृतिक एकता व लगाव का प्रतीक मानी जाने वाली भाषा (राष्ट्रभाषा) के रूप में स्वाधीनता आंदोलन के दौरान हिंदी को सर्वस्वीकृति प्रदान की गई जिसमें काशीनागरी प्रचारिणी सभा व दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का अतुलनीय योगदान रहा।

काशीनागरी प्रचारिणी सभा का राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास मे योगदान :—

① हिंदी भाषा मे कोष निर्माण। उदा० - हिंदी ⇄ तेलुगु
② व्याकरण ग्रंथ रचना - कामता प्रसाद गुरु व किशोरीदास वाजपेयी द्वारा।
③ टंकण व लेखन का प्रसार
④ हिंदी प्रचारकों व प्रशिक्षकों का काडर बनाना
 – प्रचारकों के भी प्रशिक्षण की व्यवस्था
⑤ हिन्दी को संपूर्ण भारत की सम्पर्क भाषा बनाना
⑥ परीक्षाओं का आयोजन
⑦ हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना व सतत सम्मेलन आयोजन
⑧ हिंदी मे पत्रिका निकालना

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on this margin)

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का योगदान :-

① महात्मा गाँधी द्वारा इंदौर सम्मेलन 1918 के बाद दक्षिण भारत मे हिंदी प्रचार के लिए संस्थागत व व्यक्तिगत प्रयास। (देवदास गाँधी को भेजना)

② चक्रवर्ती राजगोपालचारी द्वारा नाम दिया व इस सभा ने तमिलनाडु मे हिंदी का व्यापक प्रसार

③ इस सभा की उप-सभाएँ आंध्रप्रदेश, कर्नाटक व केरल मे स्थापित हुई।

④ हिंदी को निगम विद्यालयो व परिषद विद्यालयो मे अनिवार्य बनाना

⑤ हिंदी प्रेमी मंडल 1933, हिंदी प्रेस की भी तमिलनाडु मे स्थापना

⑥ महात्मा गाँधी, जांध्याल शिवन्न शास्त्री, अयंगर, सी राजगोपालचारी जैसे हिंदी प्रचारकों को मंच देना।

फलतः इन संस्थागत व इनमे समाहित व्यक्तिगत प्रयास हिंदी के प्रचार मे निर्णायक रहे।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) संत-साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

संत साहित्य कबीरदास, नानक, मलूकदास, रैदास द्वारा निर्मित सामाजिक सुधारक व धार्मिक साहित्य है, जिसमे खड़ी बोली का शुद्ध व मिश्रित स्वरूप दिखाई देता है।

प्रारंभिक संत साहित्य मे कबीर के सबद व अन्य काव्य रूपों मे खड़ी बोली का अन्य बोलियों का मिश्रित रूप दिखाई देता है जैसे -

" कबीरदास की उलटी वाणी
बरसैगी कंबली भीजेगा पाणी।"

यहाँ 'न' की जगह 'ण' का प्रयोग का लक्षण है।

" कबीर उलटी वाकी धार
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।"

उपरोक्त दोहे मे 'वाकी' (ब्रज) को छोड़कर सभी शब्द खड़ी बोली के लक्षण है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

उत्तरवर्ती संत साहित्य में खड़ी बोली मूलतः खड़ी बोली जैसा ही रूप धारण कर विकसित हो चुकी थी। जिसे मलूकदास के निम्न कथन से समझ सकते हैं –

"अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।"

फलतः संत साहित्य द्वारा प्रदत्त आधार 19 वीं सदी में खड़ी बोली के अखिल भारतीयता का निर्धारक बना।

(घ) 'खड़ी बोली आन्दोलन' में अयोध्या प्रसाद खत्री की भूमिका।

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

(ङ) 'कुमाऊँनी' बोली

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहिः (Candidate r not write on margin)

संस्कृत
↓
पालि-प्राकृत
↓
अपभ्रंश
↓
खस अपभ्रंश
↓
पहाड़ी हिंदी
↙ ↘
कुमाऊँनी बोली | गढ़वाली बोली

* कुमाऊँनी बोली का उद्विकास

कुमाऊँनी बोली की विशेषताएँ: →

① क्षेत्र - उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र में

② लक्षण → इस बोली पर राजस्थानी, पंजाबी आदि क्षेत्रीय प्रभाव। उदा॰ - 'ण' का प्रयोग

→ खस के रूप में बाह्य प्रभाव (तिब्बत)

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

(3) शब्द : - शब्द समायोजन की प्रकृति

(4) ~~महाप्राण ध्वनि के अल्पप्राणीकरण की महत्व~~ । उदा० - धोखा > धोका

(5) राजस्थानी प्रभाव में विलक्षणता ।

drishti | दृष्टि The Vision

2. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण के विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

ब्राह्मी लिपि से उद्गमित हिंदी की लिपि देवनागरी के मानकीकरण से संबंधित बहुविध प्रयास हुए।

देवनागरी लिपि मानकीकरण के प्रयास

- चरण ① — व्यक्तिगत स्तर पर
- चरण ② — संस्थागत स्तर पर
- चरण ③ — (1955 के बाद)

व्यक्तिगत प्रयास : →

① सावरकर बंधुओं द्वारा 'अ' की बारहखड़ी प्रदान की जिसे महात्मा गांधी सहित संपूर्ण महाराष्ट्र में महत्व मिला।

② तिलक द्वारा केसरी पत्र के लिए तिलक फॉंट

③ पंडित श्रीनिवास दास —

(i) ख > कु [महाप्राण ध्वनियों की जगह अल्पप्राण के साथ 'ऽ' लगाएं]

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

④ गोरखनाथ द्वारा - मात्रा को दाँयी, बाँई जगह अंतराल देकर दाँयी ओर लगाया जाये।

मीना > म ी न ा

राधा > र ा ध ा

⑤ अनुस्वार व अनुनासिक का प्रयोग बढ़ाकर हिंदी मे सरलता लाई जाये।

उदा॰ - चञ्चल > चंचल

गङ्गा > गंगा

संस्थागत प्रयास

① काशी नागरी उप समिति द्वारा गोरखनाथ व स्वावरस्था बारहखड़ी को अस्वीकृत किया।

② हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा : -

(i) स्वावरस्था बारहखड़ी अस्वीकृत

(ii) ख, झ मे गुजराती घुंडी का प्रयोग रहे

(iii) शिरोरेखा मुद्रण मे रहे लेखन मे नहीं

(iv) मात्राऐं यथास्थान रहे

(v) द्ध > द्द, उदा॰ सिद्धार्थ > सिद्दार्थ

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए
(Candidate must not write on margin)

③ उत्तर प्रदेश सरकार की नरेंद्र देव समिति 1947

(i) 'इ' की मात्रा आधी रूप के दायीं ओर जो बाद में अस्वीकृत।

उदा० - कीना > की ना

तीसरा चरण: - सरकार द्वारा बहुविध प्रयास

(i) हिंदी प्रचार लेखन सम्मेलन 1966
(ii) हिंदी भाषा मद्रण समिति 1967

↓

यद्यपि इन सुधारों ने देवनागरी मानक व अखिल भारतीय लिपि बनी है लेकिन सुधार की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है।

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

अपभ्रंश संस्कृत से हिंदी विकास की ~~की~~ मध्यकालीन आर्यभाषा की तीसरी अवस्था है। जिसका तात्पर्य है भ्रष्टभाषा।

कारक - व्यवस्था किसी वाक्य के कर्ता व कर्म का स्थान व महत्व निर्धारित करती है।

उदा० - राम ने रावण को मारा।

यहां कर्ता के साथ 'ने' व कर्म के साथ 'को' कारक आया है।

अपभ्रंश के विकास के दौरान कारक :—

(1) सामान्यतः कारक प्रयोग नहीं
(2) निर्विभक्तिक प्रयोग बढ़ना

drishti | दृष्टि The Vision

(3) 'हि' विभक्ति का सर्वत्र प्रयोग।
' ~~रावणहि~~ "रामहिं रावणहि मारहिं"

(4) कर्ता के लिए 'ने' कारक का विकास जो अपभ्रंश में 'णे' के रूप में भी विकसित हुआ। (डा. तगारे)

(5) स्वतंत्र परसर्ग विकास मुख्य विशेषता।

(6) कर्ता → ने या हिं विभक्ति
कर्म → को

(7) शेष कारकों का विकास समय के साथ हुआ।

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) हिन्दी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि
(Candidate r not write on margin)

संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को कहा जाता है।

जैसे - राम, दिल्ली, केला

संज्ञा वह विकारी तत्व है जो हिंदी की संपूर्ण वाक्य रचना को प्रभावित करता है।

उदा॰ - ~~राम के भाई विद्यालय जा रहे~~ हैं।

~~सीता की~~

उदा॰ - रमेश खाना खाता है।
सीता खाना खाती है।

- राम का भाई
सीता की बहन

हिंदी संज्ञाओं को व्यावहारिक सरलता व वैज्ञानिकता के लिए मुख्यत: 3 प्रकार का माना जाता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

① व्यक्तिवाचक संज्ञा – जो किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध कराये।

उदा० – कृष्णा, ~~[illegible]~~, दिव्या

② समूहवाचक संज्ञा – जो किसी समूह को अंकित करे।

उदा० – ग्वाले, बेरोजगार,

③ भाववाचक / द्रव्यवाचक संज्ञा :– जो संज्ञा किसी भाव का अभिव्यक्त करे।

उदा० –

प्रदीप संज्ञा ~~[illegible]~~ के साथ पर सर्वनाम का प्रयोग जो वास्तवतः संज्ञा का ही रूप है उसे विस्तार प्रदान करता है।

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि
(Candidate r not write on margin)

drishti | दृष्टि The Vision

3. (क) 'पूर्वी हिंदी' और 'पश्चिमी हिंदी' की व्याकरणिक भिन्नताओं पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

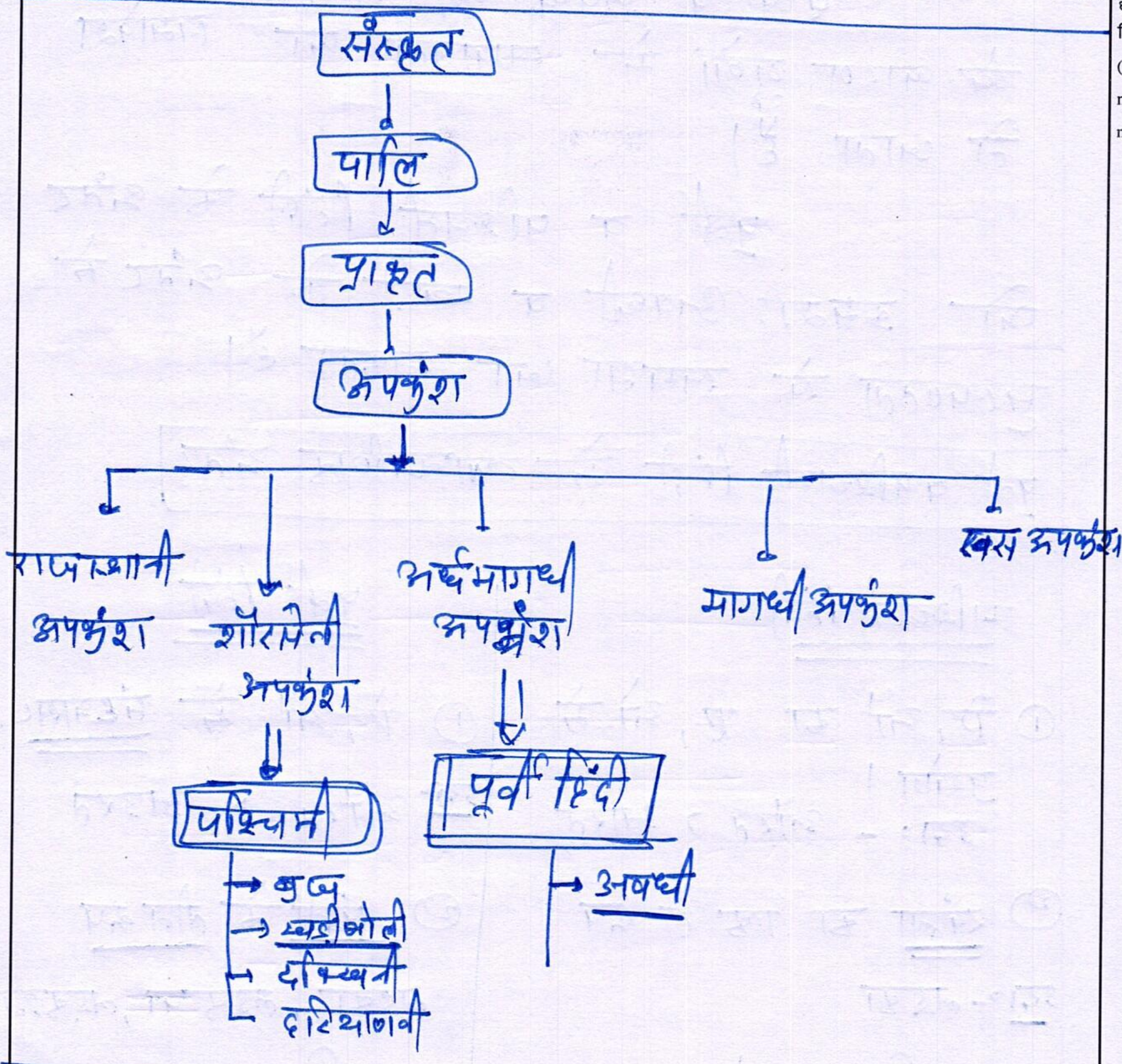

उपरोक्त चार्ट से स्पष्ट है कि पूर्वी व पश्चिमी हिंदी मूलतः संस्कृत का हिंदी में वियोगीकरण की प्रक्रिया में क्षेत्रीय प्रभावों से समावेशित विशिष्ट बोलियाँ या उपभाषाएं हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

ब्रज व अवधी की समानता (भौगोलिक) के कारण गुणों में समानता का समावेश हो जाता है।

पूर्वी व पश्चिमी हिंदी के अंतर को क्रमशः अवधी व खड़ी के अंतर से सुस्पष्टता से समझा जा सकता है।

पूर्वी व पश्चिमी हिंदी में व्याकरणिक अंतर

पश्चिमी हिंदी	पूर्वी हिंदी
① ऐ, औ का ए, ओ में प्रयोग। उदा० - औरत > ओरत	① ऐ, औ में संध्यक्षर उदा० औरत > अउरत
② संज्ञा का एक ही रूप उदा०- लड़का	② संज्ञा के तीन रूप लड़का, लड़वा, लड़उना
③ सर्वनाम प्रयोग - मेरा, म्हारा, हमारा थारा, हमने, तेरा उसका, वाका, उनका कुण, कौन,	③ सर्वनाम - मैं, मोरा, हमम हमन, तुम्ह, इन्हि

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

④ विशेषण - आधारीत विशेषण विकारी शेष नहीं।

उदा० काला > काली, काले

⑤ लिंग - 'इन', 'ईया', नी, इ' का प्रयोग द्वारा स्त्रीलिंगीकरण

उदा० → पंडित > पंडिताइनी

⑥ वचन - बहुवचनीकरण के लिए अनुस्वार, ए, न इन का प्रयोग।

रात > रातें

⑦ क्रिया रूप: —

वर्तमान → 'त' व 'उ' रूप

भूतकाल → चल्या,

भविष्य काल → 'ग' रूप
आयगा

④ विशेषण अविकारी:
छोट लरकवा

⑤ लिंग बदलाव के नि, नी, इन, ई, इया का प्रयोग।

पंडित > पंडिताइन

⑥ बहुवचन प्राय: 'न', 'न्हि' द्वारा व कहीं कहीं लोग का प्रयोग

हाथ > हाथन्हि

"रतन छुआ जिन हाथन्ह सेति"
(पदमावत)

⑦ क्रिया रूप:

वर्तमान काल → त रूप

भूतकाल → व रूप

भविष्य काल → 'ह' रूप

उदा० "पदमावति सो कहेहुं बिहंगम।"

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

④ कारक व्यवस्था

कर्ता - ने
कर्म - को, कू
करण - से, सुं, सौं
संप्रदान - के लिए, काजे, वास्ते
अपादान - से, में, पर

कारक व्यवस्था

कर्ता → ∧
कर्म →
करण → सुँ, सौं,
संप्रदान → लिए, कौ,

फलत: दोनो बोलियाँ अपने 2 गुणों का योगदान कर हिंदी को वर्तमान मानक रूप प्रदान करती है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

विशेषण वस्तुतः संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले पद होते हैं।

जैसे - मोहन गोरा है। यहां पर 'गोरा' मोहन की रंग की विशेषता को प्रकट कर रहा है।

विशेषण किसी भी वाक्य संरचना को प्रभावशीलता व लाक्षणिकता प्रदान करता है।

* विशेषण के प्रकार :
① संख्यावाचक विशेषण - दस, बारह
② गुणवाचक विशेषण - मुरलीधर, बुद्धिमान, तेज
* ~~विशेषण की के अनुसार लिंग~~ -
* विशेषण - विशेष्य के लिंग से प्रभावित होता है।

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

→ आकारांत विशेषण पूर्णतः विकारी
जैसे - छोटा लड़का > छोटी लड़की

→ दक्खिनी हिंदी के स्त्रीलिंग शब्दों के साथ प्रयोग -
काली लड़की > कालियाँ लड़कियाँ

* विशेषण में असमानता की समस्या
उदा० - पूर्वी हिंदी में विशेषण अपरिवर्तित होने से वाक्य निर्माण व भाषा में जटिलता [छोट लरकवा]

* विकारोत्पादक तत्व से प्रभावित होते है
लिंग वचन कर्ता कारक

*

फलतः विशेषण हिंदी भाषा के विकास में निर्णायक है।

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि·
(Candidate r not write on margin)

(ग) क्या अवहट्ट को स्वतंत्र भाषा मानना उचित है? इस प्रश्न का तार्किक उत्तर देते हुए अवहट्ट की शब्दकोशीय विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

"सक्कय वाणी बुहअण भावई, पाउअ रस न मम्म को पावई।
देसिल बअणा सब जण मिट्ठा, तें तैं सण जंपहों अवहट्टा।"

पदावली (~~विद्यापति~~) की ~~और~~ उपरोक्त पंक्ति अवहट्ट को एक स्वतंत्र भाषा ही नहीं बल्कि उसे संस्कृत से श्रेष्ठ भाषा का दर्जा प्रदान करती है।

यद्यपि यह विवाद सदैव रहा है कि अवहट्ट को स्वतंत्र माना जाये या अपभ्रंश का ही एक परिवर्धित रूप माना जाये।

अवहट्ट को स्वतंत्र भाषा का दर्जा वस्तुत: उसकी विशिष्टता विशेषत: अपभ्रंश से पृथकता पर निर्भर करता है

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

अवहट्ट की शब्दकोशीय विशेषताएं व विलगता:-

① अपभ्रंश एक तत्सम बहुल भाषा है जिसमे तद्भव व देशज शब्दों का प्रयोग अवहट्ट से कम हुआ है
जैसे = चौधरी

② ऐ, औ का प्रयोग मूलत: अवहट्ट का ही विकास है जो पुरानी हिंदी के बाद हिंदी भाषा का आधार बना।

③ अवहट्ट के शब्दकोष में निरुनासिकीकृत शब्दों का सर्वथा अभाव रहा।
उदा० → अपभ्रंश मे सिंह का सीह हो जाता है लेकिन अवहट्ट मे नहीं।

④ डा. तगारे के अनुसार 'ने' विभक्ति (कर्ता के लिए) अवहट्ट की अद्वितीय विशेषता है।

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

(5) अपभ्रंश में तत्सम > तद्भव > देशज > विदेशज का अनुक्रम है वहीं अवहट्ट में तद्भव > देशज का प्रयोग अधिक है।

उदा० – उपरोक्त प्रथम पंक्ति के उदाहरण में सक्कय, देसिल, मिट्ठा का प्रयोग।

यद्यपि 'न' की जगह 'ण', आकारांत, स्वरांत, स्वतंत्र परसर्ग सहित देसों ~~ऐसे~~ गुण हैं जहाँ अपभ्रंश व अवहट्ट समान है।

मूलतः भारत की भाषायी विविधता की समृद्धता व पदावली जैसे स्वतंत्र प्रयोग रूपी भाषा (स्वतंत्र) मान्यता के पक्ष को सशक्त करते हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहिः
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

(ख) मानक हिंदी की वाक्य-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहिः
(Candidate r
not write on
margin)

(ग) 'खड़ी बोली' बोली की भाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहिः
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नह
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) निराला के प्रगीत

प्रगीत गीत जैसी संक्षिप्त, एकान्विति, गेयता जैसे गुण धारण की हुई रचनाएँ जिन्हें न तो गीत माना जा सकता व न ही गद्य।

निराला के प्रगीत वस्तुत: आधुनिक युग मे गद्य के विकास व प्रभाव का परिणाम है।

जिस प्रकार गद्य ने कविता के लिए केवल 'भावना' अर्थात 'भावों का प्रयोग' का विकल्प छोड़ा, इसने न केवल सरोज-स्मृति बल्कि कामायनी पर प्रभाव डाला व कामायनी भाव प्रधान महाकाव्य बना।

निराला की रचना 'जूही की कली' हिंदी का पहला प्रगीत रचना है सरोज-स्मृति मे भी निराला की प्रवृति ऐसा ही रूप धारण करती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नह लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

प्रगीतों में छंद का नियम
टूटता है लेकिन लय बनी रहती है।

उदा० - " दुःख ही जीवन की व्यथा रही
क्या कहूँ जो आज नहीं कही।"

प्रगीत वस्तुतः छोटी कविता
लिखने में रचनात्मक है लेकिन महाकाव्य
रचना को बाधित करता है

उदा० - निराला की रचना राम की
शक्तिपूजा पर प्रभाव।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) हालावाद

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहिः
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहीं
लिखना चाहिए
(Candidate must
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) प्रपद्यवाद

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

प्रपद्यवाद मूलत: नकेनवाद है जिसमे तीन लेखक जिनके नाम पर नकेन बना है। इनका दावा है कि ये वास्तविक अर्थों मे प्रयोगशील लेखक/कवि है।

प्रपद्यवाद के गुणधर्म विश्लेषण

① ये प्रयोग करना ही अपना लक्ष्य मानते हैं न कि प्रयोग को साधन।

② प्रयोगवादी धारा की आलोचना करते हुए उन्हे अवास्तविक अंकित करते हैं क्योंकि वे प्रयोग करके अपना लक्ष्य प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।

कमियाँ:

① सीमित क्षेत्रीय प्रभाव

② अंत मे प्रयोगशील का प्रयोगवाद मे रूपांतरण। अर्थात इनका प्रयोग लक्ष्य वस्तुत: ~~साधन~~/साधन बन जाता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहिः (Candidate r not write on margin)

(घ) 'आंचलिक कहानी' का परिचय

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on this margin)

आंचलिक कहानी आंचलिक उपन्यास की तरह प्रेमचंदोत्तर युग में अंचल पर केंद्रित कहानियां हैं जिनमें अंचल के माध्यम से कथ्य को चित्रांकित किया जाता है।

हिंदी के प्रमुख आंचलिक उपन्यासकार 'रेणु' ने आंचलिक कहानी के लेखन में अहम रोल अदा किया है।

आंचलिक कहानी की विशेषताएं :→

① 'अंचल' कहानी का नायक
② संवेदना का मानवेत्तर जगत पर प्रसार
③ अंचल के भौगोलिक व सांस्कृतिक पक्षों का विशद वर्णन
④ लोकगीतों का सूक्ष्म प्रयोग

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

(5) लोकजीवन के तत्व ~~कथ~~ कहानी मे समाहित।
जैसे - मेले, त्योहार, बसंत, खेती इत्यादि।

(6) शब्दावली मे लोकजीवन का समावेश।
उदा० - मह्वट नीक, दवंगरा, बम्मा ढोली जैसे शब्द।

(7) प्रमुख आँचलिक कहानीकार -
- फणीश्वरनाथ रेणु

आँचलिक कहानी भी कहानी विधा की महत्वपूर्ण लेकिन उपेक्षित विधा है।

(ङ) सिद्ध साहित्य की प्रवृत्तियाँ

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

सिद्ध साहित्य वाममार्गी बौद्धों द्वारा 7वीं-8वीं शताब्दी से 10-11वीं शताब्दी के मध्य धार्मिक प्रचार प्रसार के लिए रचित साहित्य है।

जैसे - सरहपा, सबरपा, कण्हपा लुइपा आदि के चर्यापद, दोहे इत्यादि।

प्रवृत्तियाँ :- संवेदना

① अपनी धार्मिक मान्यताओं के प्रचार के लिए साहित्य।

'शुक्ल जी ने मात्र शुष्क धार्मिक प्रचार के कारण इन्हे साहित्य नहीं माना था।'

② सामाजिक कुप्रथाओं व आडंबरो पर चोट कर प्रगतिशीलता लाना उद्देश्य। जैसे-

"पंडिअ सअल सत्थ बक्खाणअ
देहहिं बुद्ध बसन्त ण जाणहिं।"

अर्थात् पंडित जो सत्य का

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

ज्ञान देते हैं, इन्हें नहीं ज्ञान की बुद्ध हमारे अंदर ही बसते हैं।

(3) साधना के लिए भोग की पंचमकार पद्धति देना (जिसमे मुद्रा, मैथुन, मांस, मदिरा का अतिसेवन पर बल)

शिल्प

(4) भाषा अर्धमागधी अपभ्रंश मे रचित साहित्य।

(5) 'ण' का प्रयोग, उकारांतता आदि लक्षण खड़ी बोली के सामीप्यता प्रदान करते है।

(6) चर्यापद, दोहे के रूप मे नये छंद

(7) हिंदी को संधाभाषा का प्रारंभिक रूप देना।

फलत: ये प्रवृत्तियाँ हिंदी साहित्य के उत्तरोत्तर काव्य यथा कबीर, मीरा, दोहा साहित्य मे प्रत्यक्ष या ~~[illegible]~~: परोक्षत: दिखाई देती हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

6. (क) क्या गोस्वामी तुलसीदास का कलियुग-वर्णन तद्युगीन अमानवीय स्थितियों का ही आख्यान है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 20

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस व कवितावली में इन्होंने कलयुग का मार्मिक वर्णन किया है।

'एक अच्छी रचना वही रहती है जो अपने देश-काल के दायरे में सीमित न रहे।' (शुक्ल)

आचार्य शुक्ल जी की उपरोक्त पँक्ति के अनुरूप ही तुलसीदास का कलयुग वर्णन न केवल तद्युगीन बल्कि वर्तमान का भी सटीक आख्यान है।

तुलसीदास के काव्य में कलियुग वर्णन :—

① कवितावली में आर्थिक कलयुग का सटीक वर्णन है।

अकाल का दृश्य — " कलि बारहिं बार दुकाल परै
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।"

बेरोजगारी, गरीबी का दृश्य —

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

जहाँ न तो वैश्य के पास व्यापार है, न ही किसान के पास खेती। सभी लोग परेशान है कहाँ जाये व ~~क्या~~ क्या करे।

"बनिक को न बनिज, न भिखारी को भीख
खेती न किसान को, न चाकर को चाकरी
जीवमान लोग कहाँ जाई का करी।"

(2) ~~रामचरित~~

उपरोक्त वर्णित दुर्दशा न केवल तद्युगीन बल्कि वर्तमान में भी भारत सहित संपूर्ण विश्व में व्याप्त है।

उदा० - अफ्रीकी देशों में मंहगाई व अकाल जनित स्वास्थ्य संकट

- भारत में कोविड-19 के बाद असीम रूप से बढ़ी बेरोजगारी
- खेती से व्यापक पलायन, किसानों द्वारा आत्महत्या व ऋण माफी की मांग

अतः कवितावली का यह वर्णन आज भी सटीक है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहिः (Candidate r not write on margin)

(2) रामचरितमानस में कलयुग तत्कालीन सामाजिक - सांस्कृतिक मूल्यों में विघटन व राजनीतिक दुर्दशा की ओर संकेत करता है जैसे -

(i) वर्ण व्यवस्था के पतन का संकट - शूद्रों द्वारा वर्ण नियमों के विपरीत उच्च कार्य करना व समानता की माँग करना व ब्राह्मणों द्वारा नियम द्वारा निम्न स्तर के कार्य करने पर तुलसीदास को चिंता है।

उदा० - 'विप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ वृषली स्वामी।।'

वर्तमान समानता व स्वतंत्रता के मूल्यों के संदर्भ में यह वर्णन उतना प्रासंगिक नहीं है बल्कि 'नारी की झाँई परत' व 'अवगुण आठ सदा उर रहहीं' की परंपरावादी व अप्रगतिशील नारी दृष्टि की तरह आलोचना का पात्र है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

(ii) राजनीतिक कलयुग – जहाँ तुलसीदास राजा के भोग के लिए होकर दायित्व-हीनता व जनता की दुर्दशा की ओर संकेत करते हैं।

"जोई राजा, प्रजा दुखारी भई।"

ऐसी दशा वर्तमान में भी प्रासंगिक है। यद्यपि आज राजा नहीं है लेकिन जनप्रतिनिधियों की चुनावों के बाद संवेदनहीनता व कर्तव्य से पतन, सत्ता लोलुपता व अपराधीकरण इसी ओर संकेत करते है। जहाँ नेता निजी सुख पाते हैं व आमजन दुःखी, दरिद्र, भूखा होता है।

निष्कर्षत: तुलसीदास का कलयुग वर्णन मात्र तद्युगीन वर्णन नहीं बल्कि वर्तमान दुर्दशाओं का भी सांकेतिक वर्णन है जिसका समाधान 'रामराज्य' में प्रदान किये गये लोकतांत्रिक व व्यावहार्य उपायों को अपनाकर किया जा सकता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) हिन्दी के समकालीन यात्रा-वृत्तांत पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

यात्रा-वृतांत वस्तुत: अपनी यात्रा के दौरान चेतन व अवचेतन मन मे समाहित विचारों का लिखित निरूपण है।

इस आधुनिक गद्य विधा मे अज्ञेय, राहुल सांकृत्यायन, का अमित योगदान रहा है।
जैसे - गंगा से वोल्गा, मेरी यूरोप यात्रा, अरे यायावर याद रहेगा।

समकालीन यात्रा वृतांत समकालीन सामाजिक - आर्थिक - प्रौद्योगिकी विकास के कारण विशिष्ट रूप धारण करते हैं।

समकालीन दौर मे प्रौद्योगिकी द्वारा परिवहन क्रांति (हवाई यात्रा, बुलेट ट्रेन) द्वारा यात्रा आसान हुई है

इंटरनेट के माध्यम से जुड़ाव ने अधिक व्यापक रूप व वर्चुअल यात्रा

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

को भी संभव बनाया।

इसी प्रौद्योगिकी का परिणाम है कि आज यात्रा वृत्तांतों की न केवल छपाई आसान हुई है बल्कि वैश्विक प्रसार भी मिला है।

समकालीन यात्रा-वृत्तांतों में देश व विदेश दोनों यात्राएँ प्रमुखतः शामिल हैं।

- देश की यात्राएँ
  - विभिन्न प्रदेशों की यात्राएँ
- विदेश की यात्रा
  - यूरोप
  - रूस
  - तिब्बत
  - अमेरिका

वर्तमान में यात्रावृत्तांत का अन्य विधाओं से संश्लेषण बढ़ गया है जिससे 'संस्मरणात्मक यात्रा' जैसे नये विचार पनपे हैं।

उदा० - स्मृति की रेखाएँ
- एक बूँद सहसा उछली

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

→ अतः यात्रा वृतांत अधिक व्यापक है जिसमें न केवल भौतिक व बाह्य वर्णन बल्कि यात्रा स्थल की संस्कृति, समाज, इतिहास विकास को महत्व मिला है।

↳ समकालीन यात्रा वृतांत कुछ मामलों मे अश्लीलता व अभद्रता भी धारित कर रहा है।

फलतः यात्रा वृतांत एक सतत विकासशील धारा है जो हिंदी साहित्य को बहुविध समृद्धता प्रदान करती है।

(ग) यथार्थवादी रंग-दृष्टि के आलोक में आधे-अधूरे की नाट्यभाषा और दृश्य-विधान की प्रकृति का परीक्षण कीजिए। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

मोहन राकेश का आधे अधूरे नाटक यथार्थपरक रचना है जो पति-पत्नी के आधुनिक जीवन की पूर्णता की व्याख्या है।

आधे - अधूरे

नाट्यभाषा – मौन की भाषा

– दो व्यक्तियों के मध्य द्वंद्व का चित्रण

– विविध व्यक्तित्व के कारण पात्र नाटकीयता

– तनाव का उभरना

– आधुनिक जीवन में पति-पत्नी के संबंधों की नाटकीयता।

→ पढ़ी लिखी व सशक्त महिला जो शादी के बाद परंपरा अनुसार ढलने का प्रयास कर रही है का उसके शक्की पति से द्वंद्व

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

दृश्य विधान :-

- सरल
- सीमित दृश्य
- घर का दृश्य
- भयानक दृश्य न होना (जैसे- स्कंदगुप्त)
- रंग संकेतों की उपस्थिति

फलतः यह आषाढ़ के एक दिन की तरह ही काफी सफल नाटक है।

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

7. (क) हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) हिन्दी निबंध के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं लिखना चाहिए (Candidate must not write on margin)

(ग) चंद्रगुप्त नाटक में निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का अनावरण कीजिये। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि
(Candidate r not write on margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहिः
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

8. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि
(Candidate r
not write on
margin)

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहि·
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहं
लिखना चाहिः
(Candidate r
not write on
margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'चौथा सप्तक' का परिचय दीजिये। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि॰ (Candidate r not write on margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

(ग) 'कोणार्क' नाटक पर नाट्यवस्तु एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से विचार कीजिए। 15

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को हाशिये में नहं लिखना चाहि (Candidate r not write on margin)